नवम्बर 2022 से जनवरी 2023

बातूनी

अंक-129

नवम्बर 2022 से जनवरी 2023

बातूनी

अंक-129

दिगन्तर विद्यालय द्वारा
प्रकाशित

संपादक मंडल

हेमन्त शर्मा
नौरतमल पारीक
मधु
जितेन्द्र

परामर्श

रीना दास

कम्प्यूटर सैटिंग

ख्यालीराम स्वामी

कम्पोजिंग

गणपत सैन

सम्पर्क (मुख्य कार्यालय)

दिगन्तर
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड़,
जगतपुरा, जयपुर-302017
Email : vidyalay@digantar.org
www.digantar.org

इस अंक में...

- बातूनी की बात 3
- मेरा स्कूल 4
- स्कूल 5
- अपने किये पर पछतावा 6
- पतंग 7
- सर्दी 7
- किताब 8
- समझदारी 9
- ललक 10
- बिल्ली मौसी 11
- बिल्ली 11
- छोटी–सी चिड़ियां 12
- अनुभव 13
- देश का राष्ट्रीय पर्व 14
- गरीब माँ 15
- मेहनत 16
- तितली आई 17
- मेरा प्यारा घोड़ा 18
- बकरी 18
- खरगोश 19
- जादुई पेड़ 20
- मदद 21
- सपने में शेर से मुलाकात 22
- हिम्मत 23
- बादल बरसो 24
- संवाद 25
- सवालों के जवाब 26–27

मुख्य आवरण : साबिरा व सानिया, समूह–मेहन्दी
पिछला आवरण चित्र : फोटो कॉलाज
बॉर्डर बनाया : सादेका, समूह–महक

बातूनी की बात

प्यारे बच्चो!

नमस्ते, कैसे हैं आप ? आशा करती हूँ कि आप सभी स्वस्थ और मजे में होंगे। आपकी बातूनी हमेशा की तरह आपके लिए विभिन्न कहानियाँ और कवितायें लेकर आई है, जिन्हें पढ़ कर आपको बहुत आनन्द आने वाला है। प्यारे बच्चो, मुझे यह जानकार बहुत खुशी हुई कि आपने बातूनी (अंक 128) के पिछले पृष्ठ पर छपे चित्र पर अपने–अपने संवाद लिखकर मुझे भेजे हैं, उन्हें इस अंक में प्रकाशित किया गया है।

प्यारे बच्चो, अब कड़ाके की सर्दी हो रही हैं। इसलिए आपको अपना विशेष ध्यान रखना होगा। गरम और ऊनी कपड़े पहनने है, गर्म चीजें खानी हैं, ठंडी चीजों को खाने से बचना हैं। अगर लापरवाही की, तो आप बीमार हो जाओगे और फिर स्कूल नहीं आ पाओगे। आप हमेशा की तरह मुझे कहानी, कविता, पहेलियाँ, संवाद और नाटक लिखकर भेज सकते हो।

इन्तजार में आपकी अपनी प्यारी बातूनी।

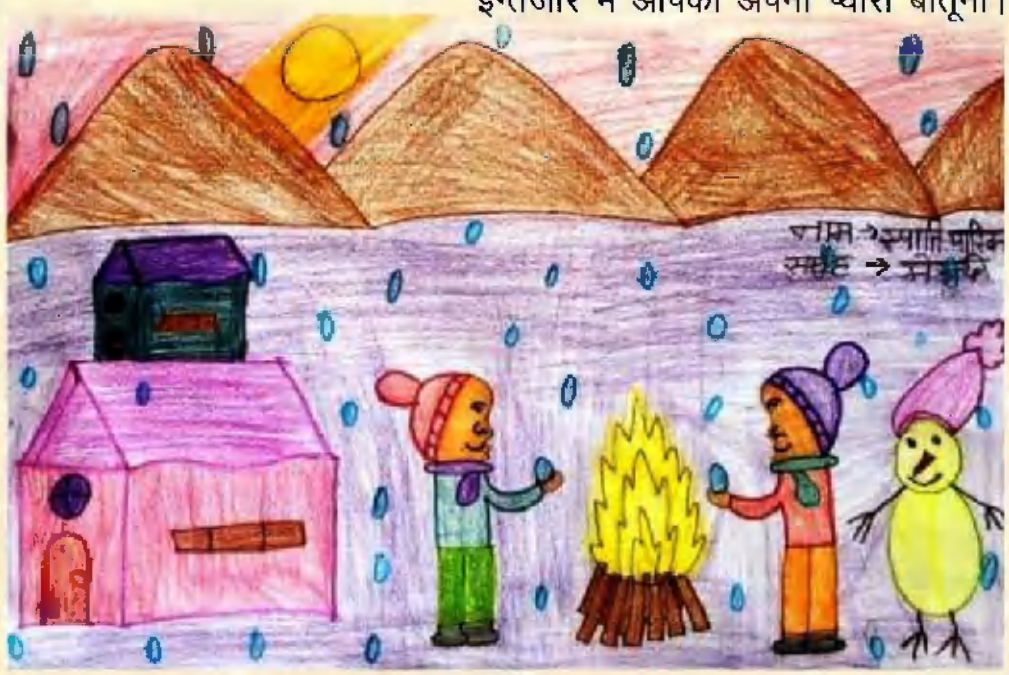

मेरा स्कूल

मेरा प्यारा है स्कूल,
सबसे न्यारा हैं स्कूल,
मिलजुल कर हम रहते हैं।
मिलजुल कर हम खेल खेलते।
कोई झूला झूल रहे हैं।
कोई दौड़ लगाते हैं।
खो–खो मेरा प्यारा खेल,
सब बच्चो का इसमें मेल,
मेरा प्यारा है स्कूल,
सबसे न्यारा है स्कूल।

– मिताली, समूह–आँगन

स्कूल

सबसे प्यारी, सबसे न्यारी, हैं हमारी यह स्कूल,
प्यार से पढ़ना, प्यार से सीखना,
सबसे अनोखी है यह स्कूल,
भागे–भागे आते हैं हम सब,
मम्मी रोके, पापा रोके, नहीं रुकते हैं हम सब,
हर दिन नया करते रहते हैं हम,
सीखने को मिलता हैं बहुत कुछ,
सबसे प्यारी, सबसे न्यारी, हैं हमारी यह स्कूल,
खेल–खेल में सीखते हैं हम सब,
डर नहीं यहां किसी का, सबसे प्यारी हमारी यह स्कूल।

– सादिया, समूह–सागर

अपने किये पर पछतावा

एक गाँव में दो भाई रहते थे। बड़े का नाम रमेश व छोटे भाई का नाम सुरेश था। दोनों खेती–बाड़ी कर अपना जीवन गुजारते थे। दोनों की शादी हो गई। दोनों की पत्नियों में छोटी–छोटी बात को लेकर झगड़ा होना शुरू हो गया। शादी के कुछ ही दिनों बाद वे अलग–अलग हो गये। छोटा अपनी खेती पर ध्यान देता था, इसलिए उसके खेत में अच्छी फसल होती थी। लेकिन बड़ा खेती पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता था, इसलिये फसल अच्छी नहीं होती थी। एक दिन बड़ा भाई रात के समय में अपनी बकरियों को छोटे भाई के खेत में छोड़ आया। बकरियों ने रात भर में छोटे भाई के खेत की फसल को खा कर चौपट कर दी। जब छोटे भाई ने सुबह अपने खेत में जाकर देखा तो वह बड़ा दुःखी हुआ। लेकिन बड़ा भाई मन ही मन में बड़ा खुश था। छोटे ने अपने खेत में और अधिक मेहनत करना शुरू कर दी। लेकिन बड़े भाई को छोटे भाई की मेहनत रास नहीं आ रही थी। उसने सोचा कि इसके खेत में अच्छी फसल क्यों होती है। उसने सोचा कि इसके खेत में फिर से बकरियों छोड़नी पड़ेंगी। लेकिन छोटे भाई ने अपने खेत के चारों ओर अच्छी तरह से तारों की बाड़ लगा दी, ताकि खेत में कोई जानवर नहीं आ पाये। इस बारे में बड़े भाई को पता नहीं था। उसने रात में अपनी बकरियों को छोटे भाई के खेत की ओर छोड़ दिया। बेचारी बकरियों रात के अंधेरे में इधर–उधर घूमती रही, लेकिन खेत का रास्ता ही नहीं मिला तो बकरियां घूमती हुई बड़े भाई के खेत में ही चली गई। उसके खेत की पूरी फसल को चौपट कर दी। सुबह जब बड़ा भाई अपनी बकरियों को लेने खेत पर गया तो देखकर सिर को पकड़ कर बैठ गया और अपने किये पर पछताने लगा।

– खुशी, समूह–ऑमन

पतंग

आसमान में उड़ी पतंग,
रंग–बिरंगी मेरी पतंग,
बादलों को छूती मेरी पतंग,
गिलास दारा आंखल दारा,
सबसे न्यारी मेरी पतंग,
छत पर जाता इसे उड़ाता,
ये काटा, वो काटा का शोर मचाता,
सारे घर में धमाल मचाता,
पतंग–पतंग का शोर मचाता,
अब लड़ने में जूटी पतंग,
अरे कट गई मेरी पतंग,

– आरिश, अनस, समूह–सागर

सर्दी

सर्दी आई, सर्दी आई
सर्दी में कपकपायें हम
कोहरा होता खूब घना
कपड़े पहनों ऊनी और गरम
खाना खाओ गरम–गरम
मुहं से निकले धुआं–धुआं
दांत भी बोले किट–किट–किट
सर्दी आई, सर्दी आई

– कुलदीप, समूह–मेहँदी

किताब

किताबें करती है बातें, किताबें करती हैं बातें।
हमारी, तुम्हारी, हम सब की प्यारी।
किताबें करती हैं बातें।
किताबें हमको पढ़ना सीखाती हैं।
किताबें लिखना सीखाती हैं।
किताबें कलेक्टर बनाती।
किताबें अच्छे–बुरे का ज्ञान कराती है।
किताबें हमको सब बताती है।
किताबें कितनी प्यारी हैं।
किताबें सारे जग से न्यारी हैं।
किताबें करती हैं बातें, किताबें करती हैं बातें।

– विजय योगी, समूह–आँगन

समझदारी

एक गाँव था। उस गाँव में बहुत सारे लोग रहते थे। उसमें सीता और उसका बेटा कालू भी रहता था। सीता के पति की कुछ समय पहले मौत हो गई थी। सीता के घर की आर्थिक हालात ठीक नहीं थे। घर की सारी जिम्मेदारी उसी पर आ गई। उनके एक पड़ोसी इकराम, उसकी पत्नी और उनका बेटा मोहसिन था। ये बहुत अमीर थे और अपनी अमीरी पर घमंड भी करते थे। दीपावली आने वाली थी, तो सीता दीपावली मनाने के लिए पैसे जमा कर रही थी। दिन गुजरते गए सीता अपने बचे हुए पैसे गुल्लक में जमा करती रही। दीपावली की पहली ही रात को सीता और उसका बेटा दीपावली मनाने की योजना बना ही रहे थे कि अचानक से उनके घर में दो चोर आ गए और उन्होंने चाकू दिखाकर कहा कि जो भी तुम्हारे पास है, हमारे हवाले कर दो। पहले तो वे दोनों सकपका गए, लेकिन सीता के बेटे ने हिम्मत दिखाई और चोरों की नजर से बचकर पुलिस को फोन कर दिया। थोड़ी ही देर में पुलिस आ गई और दोनों चोरों को पकड़कर अपने साथ ले गई। अपने बेटे की समझदारी से माँ बहुत खुश हुई। फिर उन दोनों मां बेटे ने दीपावली बड़े ही धूमधाम से मनाई।

– सादिया, समूह–खुशबु

ललक

एक गांव था। उस गांव में सुरेश नाम का आदमी रहता था। उसके साथ उसकी पत्नी व उसके बच्चे भी रहते थे। गाँव का नाम मणिपुर था। उस गाँव के स्कूल में बहुत कम बच्चे पढ़ते थे। वहां की लड़कियों को उनके माता–पिता नहीं पढ़ाते थे। सुरेश भी अपनी बेटी को नहीं पढ़ाता था। सुरेश के दो बच्चे थे, एक लड़की और एक लड़का। लड़की का नाम सीमा और लड़के का नाम राजू था। राजू को खेलने का बहुत शौक था। वह स्कूल के नाम से बाहर दोस्तों के साथ खेलने चला जाता था। सीमा का पढ़ाई में बहुत मन था, जब वह भाई को खाना देने स्कूल जाती थी। तब वह थोड़ी देर वहीं रुक जाती और जो मैडम पढ़ाती थी, उसे सुनती व समझती। ऐसा कई दिन चलता रहा। एक बार वह कई दिन स्कूल नहीं आई तो राजू की मैडम उसके घर गई और कारण जानना चाहा तो उसने कहा कि इस गाँव में लड़कियों को नहीं पढ़ाते। शिक्षिका ने बातचीत की, कि पढ़ाई हमारे क्या काम आती है? उसने काफी लंबी बातचीत की और सीमा को लगातार विद्यालय आने के लिए उसके पिता को तैयार कर लिया। अब सीमा अपने भाई राजू के साथ विद्यालय में पढ़ने जाने लगी। इससे गाँव वाले भी प्रभावित होकर अपनी लड़कियों को विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजने लगे। इससे गांव वाली पर काफी प्रभाव पड़ा और अधिकांश लोग लड़कियों को विद्यालय भेजने लगे।

– नीतू, समूह–रोशनी

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी चली बाजार।
हाथ में पर्स, मुंह पर मेकअप।
देखकर सब हो गए हैरान।
झींगुर उछला।
उछल–उछल कर सब कहने लगे।
लो आ गई झींगुर की बारात।
झींगुर रोया बिल्ली रोई।
आ गया तूफान।
झींगुर दौडा, बंदर दौड़ा, कुत्ता दौड़ा, बिल्ली दौड़ी।
हो गया बिल्ली का मेकअप खराब।

– फिजा, समूह खुशबू

बिल्ली

बिल्ली हमारी, कैसे बैठी बेचारी।
उसको दूध है प्यारा, चूहा प्यारा
यह मिल जाते तो वह खुश हो जाती,
किचन में जाती चक्कर लगाती,
मम्मी को धोखा देकर, मलाई चट कर जाती।
घूम–घूम कर करती म्याऊं म्याऊं,
चूहा दिखता तो दौड़ लगाती,
म्याऊं म्याऊं करके पीछे पड़ जाती।
डोगी दिखता तो डर कर भाग जाती।

– मोहम्मद जैद, समूह–तितली

छोटी सी चिड़ियाँ

छोटी–सी है चिड़ियाँ रानी, बड़ी सयानी
छोटे–छोटे तिनके से अपना घर बनाती हो
कभी पेड़ों की डाली पर कूदती हो
कभी पानी में फुर–फुर नहाती हो
हर मौसम में मेहनत तुम करती हो
चीं–चीं चूँ चूँ से सुबह सबको उठाती हो
खुद भी दाना चुगती हो, बच्चो को भी खिलाती हो
फिर पंख फैला कर आसमां में उड़ जाती हो

– स्वाति पारीक, समूह–मेहँदी

अनुभव

मैं मोहित, मेहँदी समूह में पिछले दो साल से पढ़ रहा हूँ। मुझे यह स्कूल शुरू से ही अपने पहले वाले स्कूल से अलग लगा। क्योंकि यहाँ पर सब बच्चों को समान समझा जाता है और उन्हें हर गतिविधि में शामिल किया जाता है। यहाँ ऐसा मानना है कि सब बच्चों को मौका मिलना चाहिए। मुझे भी इस साल 26 जनवरी को मंच संचालन करने का मौका मिला। यह सुन कर मुझे बहुत खुशी हुई और मैं बड़े उत्साह से तैयार हो गया। इस 26 जनवरी को हमारे स्कूल में, ''यह कहता है हमारा संविधान'' थीम पर बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और संविधान, महिलाओं के अधिकार और कर्त्तव्य, महिलाओं की विभिन्न क्षेत्रों में भूमिका, धर्मनिरपेक्षता को बताते हुए झलकियाँ प्रस्तुत की। मुझे इस दिन थोड़ी घबराहट हुई क्योंकि मेरा यह पहला अवसर था इतने लोगों के सामने बोलने का, परन्तु मैंने धैर्य से जिम्मेदारी को निभाया। सच में मुझे बहुत अच्छा लगा। यह दिन मेरे लिए अस्मणीय रहेगा।

– मोहित, समूह–मेंहन्दी

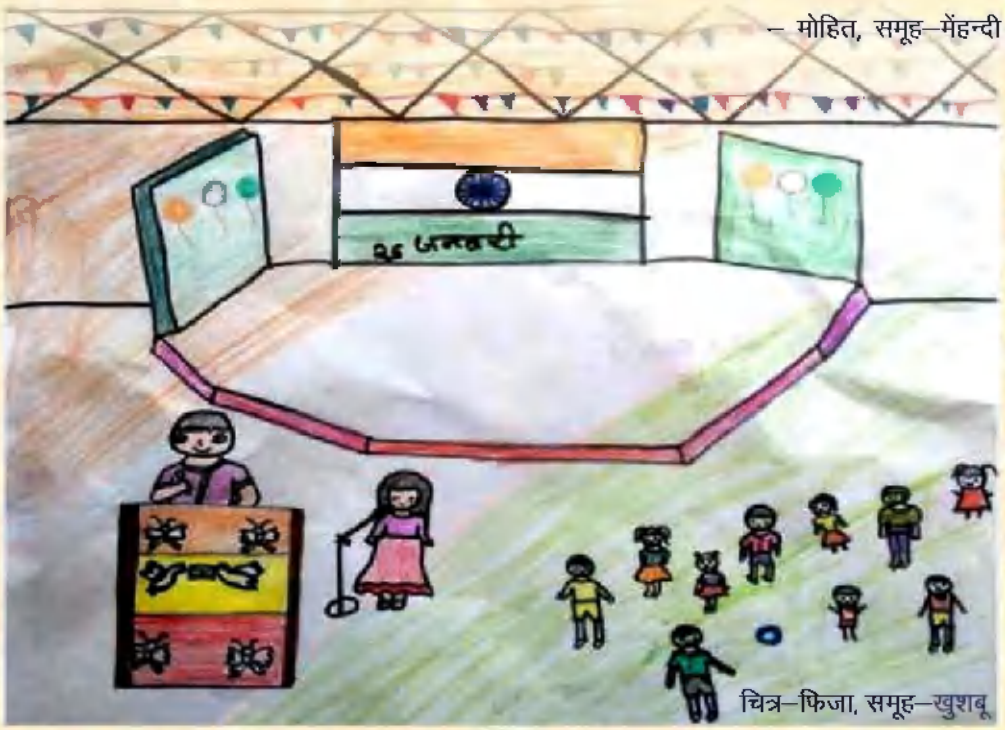

चित्र–फिजा, समूह–खुशबू

देश का राष्ट्रीय पर्व

वतन हमारा इसे ना कोई छोड़ पाये,
रिश्ता हमारा इसे ना कोई तोड़ पाये,
हिंदुस्तान हमारा है यह शान है हमारी,
26 जनवरी हमारे देश का राष्ट्रीय पर्व है।
संविधान की याद दिलाता यह पर्व है।
इस अवसर का रहता हमें इंतजार है।
हम देशवासी करते है इससे प्यार है।
गणतंत्र लाया हमारे लिए उपहार है।
26 जनवरी हमारे देश का राष्ट्रीय पर्व है।

– सानिया कुमारी, समूह–मेहँदी

चित्र–काजल
समूह–खुशबू

गरीब माँ

एक माँ थीं। उसके एक बेटा व दो बेटियां थीं। वह बहुत गरीब थीं। वह झाड़ू पोछा करके परिवार का पालन पोषण करती थी। उसे काम करने के रोज के दस रुपए मिलते थे। उसके पति की मौत किसी बड़ी बिमारी के कारण हो गई थी। उसका इलाज करवाने के लिए उसने बहुत सारा कर्जा कर लिया था। इस कारण काम के बदले जो भी मिलता, उसे बचाने का प्रयास करती ताकि जल्दी ही सारा कर्जा उतर जाए। क्योंकि उसे उधार देने वाला उधारी वापस करने हेतु परेशान करता था। वह बोलता था कि जल्दी लौटा, नहीं तो मैं तेरा घर बेच दूंगा। वह उसके आगे हाथ जोड़ती, पांव पड़ती, कहती मेरे पति भी नहीं रहे, मैं जैसे–तैसे तेरे पैसे लौटाने की कोशिश कर ही रही हूं। एक दिन वह बीमार हो गई और बड़ी बेटी से बोली, जब मैं मर जाऊं तो तू छोटे भाई–बहन का ख्याल रखना। एक दिन मां मर गई। तीनों बच्चों का अब काई सहारा नहीं रहा। जब गांव वाले उसको अर्थी को उठाकर ले जाने लगे तो बड़ी बेटी बोली कि मैं भी इसको कंधा दूंगी। गांव वाले सब उस पर थू–थू करने लगे। लेकिन उसने किसी की भी नहीं सुनी और मां की अर्थी के साथ शमशान जाकर दाह–संस्कार किया। इसके बाद वह गांव को छोड़कर शहर चली गई। वहां उसने एक अच्छा काम ढूँढ़ लिया और अपने दोनों भाई बहनों की अच्छे से परवरिश करने लगी। इस प्रकार तीनों का जीवन हंसी खुशी से बितने लगा।

– कृष्णा, समूह रोशनी

मेहनत

एक छोटा सा गाँव था। उसमें तीन भाई रहते थे। जब ये छोटे थे तब इनके माता–पिता का देहांत हो गया था। संपत्ति के नाम पर इनके पास एक छोटा सा घर था। घर के सामने आम का पेड़ था। आम के पेड़ पर आम आते थे। उनको बेच कर ये गुजारा करते थे। एक बार आमों को बेचने के लिए वे गए लेकिन आम नहीं बिके। तीनों गाँव में घूमते घूमते थक गए और एक पेड़ के नीचे बैठे गए। वहाँ से एक संत गुजरा। संत ने उनसे पूछा कि कैसे बैठे हो भाई? तीनों ने संत को आपबीती बताई। फिर बड़े भाई ने अपने हिस्से में से कुछ पके आम संत को खाने के लिए दिए। संत आम खाकर बहुत खुश हुआ और कहा कि यह आम तो बहुत मीठे हैं। संत ने उनको कहा कि इन आमों को बाजार में बेचकर बहुत सारा पैसा कमाया जा सकता है। उसके बाद वे तीनों भाई आमों को बेचने का धंधा शहर में करने लगे और उनका धंधा चल पड़ा इसके बाद तीनों भाई हँसी–खुशी से अपना जीवन यापन करने लगे।

– लक्ष्मी, समूह–खुशबू

तितली आई

तितली आई, तितली आई।
तितली आई रंग बिरंगी तितली आई।
फूलों का रंग चुसती हैं।
फूलों के मन को भाती हैं।
नाजुक है इसके पंख और है कहीं इसके ढंग।
आसमान में उड़ती है रंग बिरंगी तितली।
बाग बाग में जाती है सबको देख इतराती है।
तितली आई, तितली आई।
रंग बिरंगी तितली आई।

– सादिया, समूह–खुशबू

मेरा प्यारा घोड़ा

मेरा प्यारा घोड़ा बढ़ता जायें।
दौड़ में सबसे आगे आए।
हवा से बातें करता है।
तूफान से न डरता है।
धूल उड़ाता धूम मचाता ।
कूद फाँदकर सरपट जाता है।
मेरा प्यारा घोड़ा है।

– उषा, समूह–आँगन

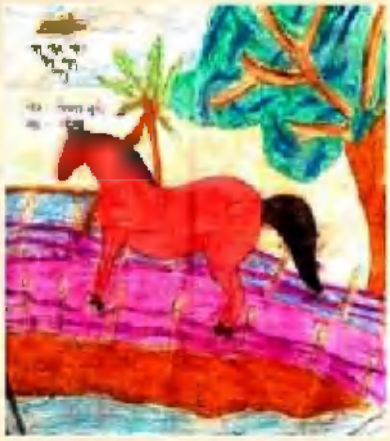

बकरी

मैं–मैं–मैं करती बकरी,
चारा चरने जाती बकरी।
चारा खा कर दौड़ लगाती,
दौड़ लगाकर पानी पीती।
पानी पीकर घर आ जाती,
घर आकर बच्चों को खिलाती।
अपने बच्चों को दूध पिलाती,
चारा खिलाती, पानी पिलाती।
मैं–मैं करके लोरी सुनाती,
प्यार से उनको वह सुलाती।

– दानिश, फरमान,
उवैस, निखिल, जैद,
समूह–तितली

खरगोश

एक खरगोश था। वह जंगल में रहता था। वह एक दिन जंगल में घूम रहा था। वह घूमते–घूमते गाँव के पास आ गया। उसने वहाँ एक गाजर का खेत देखा। वह खेत एक किसान का था। खरगोश खेत में गया और गाजर खाने लगा। इतनी देर में किसान भी खेत में आ गया। खरगोश किसान को देखकर डर गया और वह भागने लगा। किसान को वह खरगोश अच्छा लगा। उसने खरगोश से कहा कि तुम आज गाजर खा सकते हो, लेकिन कल से मेरे खेत पर मत आना। खरगोश किसान की बात सुनकर रुक गया और गाजर खाने लगा। खरगोश पेट भरने के बाद दो–तीन गाजर लेकर वापस जंगल में चला गया। इसके बाद वह वापस कभी खेत पर नहीं गया।

– तितली समूह के बच्चों द्वारा एक–एक वाक्य बोल कर बनाई गई कहानी

जादुई पेड़

एक किसान था। वह रोज जंगल में जाकर लकड़ियां काट कर लाता था। उन्हें बेच कर अपने परिवार का खर्चा चलाता था। एक दिन उसे एक जादुई पेड़ मिला। जब वह उसे काटने लगा, तब पेड़ ने उससे पूछा कि भाई तुम मुझे क्यों काट रहे हो ? तब किसान ने उसे बताया कि मैं तुझे काट कर बेचूँगा और पैसे कमाऊँगा। पेड ने उससे कहा मैं एक जादुई पेड हूँ। मुझे मत काटो, तुम जितने पैसे चाहो उतने मेरी जड़ों को खोदकर ले जाओ। जब किसान ने पेड़ की जड़ों के पास खुदाई की तो उसे बहुत सारे पैसे मिल गए। किसान खुशी–खुशी पैसे लेकर अपने घर आ गया और अच्छे से अपने परिवार के साथ रहने लगा।

– रिया, नवीन समूह–उजाला

मदद

एक जंगल था। उस जंगल में एक घर था। उस घर में एक लड़का रहता था। रोज वह लड़का जंगल में लकड़ी काटने जाता था। एक दिन उसे जंगल में शेर दिखाई दिया। शेर को देखकर वह भागने लगा। भागते–भागते रास्ते में उसे एक आदमी मिला। उस आदमी ने उससे भागने का कारण पूछा। लड़के ने उसे सारी बात बताई। आदमी ने उसे अपने साथ लिया और उसके घर पहुँचा दिया। अब वह बहुत खुश था।

– आराध्या, निखिल समूह–तितली

सपने में शेर से मुलाकात

एक बार मैं सुनसान सड़क से गुजर रहा था। रात का वक्त था, तक़रीबन 9 बज रहे थे। मैं बिना डरे सीधा जा रहा था। सड़क के दोनों तरफ घने जंगल थे। ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। मुझे हल्की–हल्की ठण्ड भी लग रही थी। दांत कँपकपा रहे थे। अचानक मुझे हाथियों के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। मैं आवाज़ सुनकर बहुत डर गया। डर के मारे तेज–तेज चलने लगा। कुछ देर चलने के बाद हाथियों के चिल्लाने की आवाज़े बंद हो गई। चलकर मैं बहुत थक गया था इसलिए थोड़ी देर रुक कर आराम करने की सोचा, और मैं वहां एक पत्थर पर बैठ गया। मैंने अपनी आँखें बंद कर ली। जब अचानक से आँखें खुली तो सामने शेर को खड़ा देखा। मैं डर गया और तेज–तेज चिल्लाने लगा। लेकिन वहां मेरी आवाज़ सुनने वाला कोई नहीं था। शेर मुझे देखे जा रहा था और अभी तक उसने मुझे कोई नुक्सान नहीं पहुँचायां था। मैंने बचने के लिए पत्थर उठाया और शेर को पत्थर मार कर भगाने लगा। शेर भी दहाड़ता हुआ मेरे पीछे भागने लगा। शेर ने मुझ पर हमला कर दिया। मैं डट कर शेर का सामना कर रहा था। फिर शेर ने मुझे दूर फेंक दिया। इस जंग में मैं बहुत घायल हुआ। मेरे पूरे शरीर पर खून ही खून था। मैं वहीं गिर गया। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आप को अस्पताल में पाया। अचानक मेरी नींद खुली तो खुद को घर में अपने बिस्तर पर पाया। क्योंकि यह एक सपना था।

हिम्मत

एक गांव में एक किसान परिवार रहता था। उसकी एक बेटी जिसका नाम रूपा था। वह बहुत ही सुंदर, सुशील और सर्वगुण संपन्न थी। एक दिन गांव में शहर से एक युवक आया। रूपा के रूप–सौंदर्य को देखकर उस पर मोहित हो गया। उसने रूपा से शादी करने के लिए रूपा के पिता से मिला और रूपा से विवाह की इच्छा जाहिर की। किसान ने कहा मैं रूपा की शादी ऐसे लड़के से करना चाहता हूं जो काबिल हो, घर अच्छे से चला सके और मेरी बेटी को खुश रख सके। और इसके लिए जो मेरी शर्त को पूरा करेगा मैं उसी के साथ अपनी बेटी की शादी कर दूंगा। युवक ने कहा, शर्त बताओ। उसने कहा मेरे पास तीन बैल हैं, जिन्हें मैं एक–एक करके छोड़ दूंगा। अगर तीनों में से एक बैल की पूंछ पकड़ कर दिखा दोगे तो मैं बेटी की शादी तुमसे कर दूंगा। युवक ने सोचा कोई बड़ी बात नहीं है। अगले दिन मैदान में जैसे ही किसान ने पहला बैल छोड़ा उसे देखकर वह युवक रुक गया क्योंकि बैल विशालकाय था। उसने सोचा इसे जाने देता हूं, दो बैल और आएंगे उनकी पूंछ पकड़ लूंगा। लेकिन जैसे ही अगला बैल आया तो युवक सकपका गया और सोचा पहले वाले बैल की पूंछ पकड़ लेता तो अच्छा रहता। क्योंकि यह बैल विशालकाय के साथ मतवाला भी था। अब उसके पास तीसरे बैल के इंतजार के अलावा कोई चारा नहीं था। जैसे ही तीसरा बैल आया तो युवक ने सिर पकड़ लिया क्योंकि उसके पूंछ ही नहीं थी। अब वह किसान को बोला कि मैं आपकी शर्त पूरी नहीं कर पाया तो किसान ने कहा कि कोई बात नहीं तुमने शर्त तो पूरी नहीं की लेकिन प्रयास किया इसीलिए मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ करने को तैयार हूं। यह सुनकर युवक बहुत खुश हुआ और उन दोनों का विवाह बड़ी धूमधाम से किया और वे दोनों खुशी–खुशी रहने लगे।

– सुमन, समूह–खुशबू

बादल

बादल–बादल बरसाओ पानी।
नहीं चलेगी तुम्हारी मनमानी।
बड़े घड़े में पानी लाओ।
प्यास हमारी जल्दी बुझाओ।
चारों तरफ पड़ा है सूखा ।
जानवर और हम मर जायेंगे भूखे।
पेड़ बेचारे तरस रहे हैं।
बादल अब बरस गये हैं।

– सोफिया, समूह–आँगन

संवाद

(बातूनी अंक–128 में छपे चित्रों पर बच्चों के संवाद)

निशा : अंजली ये देखो, इस चित्र में औरतें कुएँ से पानी भर रही हैं। लेकिन मेरी मम्मी तो नल से पानी भरती है, हमारे घर में तो नल लगा हुआ है। हर सुबह उसमें पानी आता हैं और हम भर लेते है।

अंजली : निशा नल तो हमारे घर में भी लगा हुआ है। लेकिन मेरी मम्मी पहले गाँव में ऐसे ही कुएँ से पानी भर कर लाती थी। इसमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है। मेरी मम्मी बहुत दूर तक पैदल चल कर दो मटकी पानी एक साथ सिर पर रख कर लाती थी।

निशा : हम तो जब पानी भर जाता है तो नल बंद कर देते है और पेड़–पौधों को पानी पिला देते है, जानवरों के पीने के लिए भी पानी भर देते हैं।

अंजली : निशा अगर हम पानी को बिना मतलब के फैलाते रहेंगे तो एक दिन पानी खत्म हो जाएगा। लोग पानी के लिए आपस में लड़ाई लड़ेंगे।

निशा : हम भी पानी को व्यर्थ नहीं करेंगे अन्य बच्चों को भी समझाएंगे।

– अंजली, निशा समूह–तितली

बच्चों के सवाल–जवाब

(बातूनी अंक–128 में छपे सवालों के जवाब)

सवाल 1 : बरसात हमेशा बूंदों में ही क्यों गिरती है ?

क्योंकि बादलों में चालनी के जैसे छेद होने के कारण बारिश हमेशा बूंदों में ही होती है।

– सुमन, समूह–खुशबू

क्योंकि वह बहुत ऊपर से गिरती है जिससे उसके अनेक टुकड़े हो जाते हैं और ऊपर हवा का भार बहुत ज्यादा होता है। इस कारण बारिश बूंदों में ही होती है।

– फिजा, समूह–खुशबू

क्योंकि बरसात का पानी बहुत ऊपर से आता है नीचे आते–आते वह बूंदों में बदल जाता है।

– सोहिल समूह–रोशनी

(बातूनी अंक–128 में छपे सवालों के जवाब)

सवाल 2 :
खड़ी साईकिल गिर जाती है, लेकिन चलती साईकिल नहीं गिरती ऐसा क्यों होता है ?

सवाल 2 के जवाब

1. खड़ी साईकिल इसलिए गिर जाती है कि उसका बैलेंस नहीं बनता है और चलती साईकिल इसलिए नहीं गिरती क्योंकि उसको कोई चलाता रहता है।

– सुमन, समूह–खुशबू

2. चलती साईकिल के टायर घूमते है तथा खड़ी के नहीं घूमते व उस पर कोई बैठता है तो बैलेंस बना लेता है। इस कारण वह नहीं गिरती है।

– सोहिल समूह–रोशनी

सवाल 3 : हवा कहां से आती है और यह कहां जाती है ?

1. हवा पेड़ों से बनती है और ऑक्सीजन बन कर हमारे शरीर में प्रवेश करती है और कार्बनडाई ऑक्साइड बनकर निकल जाती है।

– काजल समूह–खुशबू

2. हवा पेड़ों से आती है और नाक से हमारे शरीर में प्रवेश कर जाती है।

– सोहिल समूह–रोशनी